

CLASS – IX
SANSKRIT
ASSIGNMENT 2

| ASSIGNMENT No. 2 | |
|------------------------|-----------------|
| <u>सन्धिः</u> | |
| प्र० 1. सन्धिं कुरुत — | |
| <u>स्वरसन्धिः</u> | |
| द्वित्र + आकाशः | यदि + अपि |
| असि + इष्टः | गङ्गा + उदकम् |
| मधु + अग्निः | परम + ईश्वरः |
| ध्वनि + इन्द्रः | पितृ + अहं |
| मातृ + उदयः | हरि + इच्छा |
| परम + अग्निः | तथा + स्व |
| मत्त + शैव्यम् | सत्त + अग्निः |
| इति + अपि | परि + ईश्वरः |
| नर + उत्तमः | दान + शैव्यम् |
| सु + उचितः | यदि + अपि |
| सुधी + आकरः | महती + इच्छा |
| हित + इच्छुः | लघु + उत्पत्तिः |

| | |
|-----------------------------|--------------------|
| जल + औघः | भारत + इन्दुः |
| ग्रीष्म + ऋतुः | सूर्य + उदयः |
| शम + आश्रितः | शरणा + आगारः |
| महान् + अरण्यः | वर्षान् + ऋतुः |
| अद्यययन + अर्थम् | कुल + अननुरूपम् |
| इति + उत्तरः | स्वबाल + अपत्यस्य |
| न + अरित | अत्र + अन्तरै |
| नारित + असारयम् | नव + अनुबुद्धिः |
| ज्ञानानि + अपि | पञ्च + इन्द्रियाणि |
| न + अचलम् | यथा + उद्दिष्टम् |
| यातु + इति | गन्ध + अर्जितम् |
| स्वल्प + अवशोच्छासि | न + अस्ति + अन्यः |
| शक + शकम् + अपि + अन्वर्षीय | संवाय + उत्तरेदि |
| पितृ + उपदेशः | न्यात + आशु |
| <u>व्यञ्जनसंधिः</u> | |
| निर् + शसः | दिक् + अम्बरः |
| षट् + अङ्गानि | तत् + चित्रम् |
| उत् + लैखः | हरिश् + राजते |
| भगवत् + विन्तनम् | वाक् + दानम् |
| जरात् + ईशः | पुनरुत्थिते |
| तत् + क्षेत्रम् | उत् + ययः |
| वाटिकाम् + प्रति | शमम् + वन्दे |
| सत् + आचारः | वाक् + देवी |
| अच् + अन्तः | षट् + आननः |
| धर्मम् + चर | विद्युत् + लता |
| हरी + नाम् | लता + नाम् |
| घोष + नाम् | दमा + नाम् |
| <u>विसर्गसंधिः</u> | |
| बालः + अभम् | वृक्षाः + कम्पन्ते |
| मतिः + अभम | रुग्नाः + रघः |
| सिंहः + गर्जति | कविः + आगतः |
| नृपाः + अत्र | कः + दीकते |
| विभुः + तश्चि | हरेः + इदम् |
| धनुः + दह्नाः | बालः + तत्र |
| चन्द्रः + शोभते | शिवः + वन्द्यः |
| रथः + मक्रीडत् | सः + वदति |

| | |
|-------------------|----------------------------|
| पुरुषाः + अस्ति | काः + तै |
| कैः + उक्त्वम् | नम्राः + तत्त्वः |
| कुष्णाः + तदा | नृपाः + अत्र |
| अस्वाः + इमौ | सदिमः + तु |
| मनः + रातः | देवाः + इह |
| काष्ठात् + अग्निः | अग्निः + जायते |
| भूमिः + लोपम् | श्चितिः + उच्चैः |
| कलकलैः + एवम् | कः + अर्थवान् |
| जत्रौषः + तपसः | नवारबुभिः + सूरिविलम्बिभिः |
| अन्धाधिः + आधुषा | मानहेतोः + मातैव |
| अनुगृहीतः + अस्मि | लावत् + दविष्पामि |
| अनपौः + विधौषः | सूर्यः + अपि |

2. सन्धिच्छेदं कुरुत —

(मिश्रित-सम्पातः)

| | |
|----------------|-------------------|
| मातैव | स्नानरूपोपदेशः |
| सम्पगनुतिष्ठति | श्वैषा |
| शतान्भयि | सोऽहसत् |
| शपथैतायि | महार्णवः |
| फलौदगमैः | गात्रैकता |
| दूत्पादपः | अद्यावकाशः |
| तल्लीनः | पितृणम् |
| प्रोक्तम् | अञ्जः |
| सुनिरपम् | हिमालयः |
| तत्रैव | मालिका |
| गीरवः | स्वल्पम् |
| परमेश्वरः | तत्राशित |
| सच्चित् | श्वैषा |
| गरैश्च | जना इच्छन्ति |
| षड्देवाः | श्वैषैव |
| न्वन्द्वौऽपि | प्रभूपदेशः |
| मात्रहीनकारः | वृहो वर्धते |
| रामोऽत्र | स्वाशत्तम् |
| नद्यागमः | भगवच्चिन्तनम् |
| सुबन्तः | दिगम्बरः |
| नक्तरशैवते | अग्निश्चान्ध्रपति |